भारतीय कसान दशा और दिशा

प्रा. लोमेश्वर रामचंद्रराव घागरे

समाजशास्त्र वभाग - प्रमुख

आर. बी. व्यास कला / वा णज्य महा वद्यालय,

कोंढाळी, जिल्हा. नागपूर.

भारत की अर्थव्यवस्था मे कृषी की महत्वपूर्ण भू मका है। कृषी हमारे आ र्थक, सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नती का माध्यम रहा है। भारत के लोग कृषी को उत्सव के रूप में मनाते रहे है। प्रकृती एवं पर्यावरण की रक्षा के दायित्व का निर्वाहन, जिसमे वृक्ष, नदी, पहाड, पशुधन, जीव जंतू की रक्षा की जिम्मेदारी निभाना, जीवन के महत्वपूर्ण अध्यात्मिक कार्य का हीस्सा रहा है। वर्ष **2011** की जनगणना के अनुसार **54.6** प्रतिशत आबादी कृषी और उससे संबं धत कार्यों मे लगी हुई है।

कसान उसे कहते है, जिसकी अपनी जमीन होती है। या जो हल जोतते है। धनी कसान वे कसान है, जो ग्रामीण गृहस्थ उत्पादन के साधन रखते है। वह भूमी पर स्वंय श्रम करता है। वह खेती से अ धकांश आय प्राप्त करता है। मध्यम कसान प` की अथवा निजी भूमी रखता है। उस पर स्वयं या उसके परिवार तथा श्र मक खेती करते है। साधारण वर्षो मे वह अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ती करता है। फसल की बुरी हालत मे वह अस्थीयी रूप से ऋणग्रस्त हो जाता है। छोटा कसान प ा या फर निजी भू म रखता है। इससे उसकी मुख्य आय होती है। यह श्र मक नही लगता वह स्वयं मजदूरी करता है। खेतीहर मजदूर के पास न तो भूमी ही रहती है न ही उपकरण व कृषी या कृषीगत कार्य में श्रम बेचकर जीवनयापन करता है। देश में **90** प्रतिशत से अ धक कसान छोटे या सीमांत कसान है। इनके खेतो की जोत **5** एकड से भी कम है।

कसानो और खेती पर संकट -

आज देश मे खेती का योगदान कुल अर्थव्यवस्था के **14** प्रतिशत के लगभग होने पर भी इससे करीब **60** प्रतिशत लोगों को रोजगार मल रहा, ले कन भारत में तक खेती और कसान

को अर्थनीती मे जितना महत्व मलना चाहिए था, वह नही मल पाता है। भारत की रचना ऐसी है क जब तक खेती संकट से नही निकलेगी कसान खुशहाल नही हो सकता। यहां खेत की औसत आकार **1.15** हेक्टर है, जो काफी छोटा है। यह आकार **1970-71** से लगातार घट रहा है। लघु और सीमांत भू-स्वामीत्व का **72** प्रतिशत है। छोटी कास्तकारी की प्रधानता कृषी क्षेत्र मे बडे पैमाने पर आ र्थक कफायत की राह मे मुख्य बाधा है। इसके अतिरिक्त छोटे और सीमांत कसानो के पास मूलभाव की शक्ती कम है क्योंकी उसके पास वक्री योग्य अ धशेष कम होता है और वे बाजार की कीमत स्वीकार करने वाले होते है। बडे पैमाने पर कृषी के लाभ के लये लघु क्षेत्र वाले कसानों की बहुलता एक बडी चुनौती है।

भारत की **60** प्रतिशत खेती बारिश पर आधारित है। केवल **40** प्रतिशत खेती के लए संचाई के साधन उपलब्ध है। काफी समय से फसलो के सही दाम की मांग की जा रही है। कसानो को उनकी फसलों का उ चत मूल्य मलना चाहिए। इसी आधार पर न्युनतम समर्थन मूल्य (एम. एस. पी.) प्रणाली शुद्ध की गयी थी। पहले केवल गेंहू और धान के लए यह व्यवस्था की गई, वर्ष **1986** मे **22** जीलो के लए लागू कया गया।

पंजाब, हरियाणा, पूर्वी व उत्तरी राजस्थान, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश और पश्चिम उत्तर प्रदेश आदी को छोडकर कही भी एम. एस. पी. पर फसल खरीदने की कोई व्यवस्था नही है। इस कारण कसान साल भर मेहनत करके फसले तयार करता है ले कन उसे लागत भी नही मल पाती, जबकी बिचै लए मोठा लाभ कमा रही है। ले कन इसमे भी अनेक खा मयाँ है। जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इन खा मयों को दूर करने के लये कसान आयोग का गठन कया गया था। फल एवं मौसमी सब्जीयों का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित नही होता। जिन फसलो का एम एस पी निर्धारित होता है, वह भी कसानो को नही मलता है।

संघर्ष भरा कृषक जीवन

हमारी कृषी आबादी मे प्रत्येक वर्ष **1.84** प्रतिशत की वृध्दी हो रही है। औसत जोत आकार प्रत्येक वर्ष छोटा होता जा रहा है। खेती की लागत जो खम प्रतिफल पद्धति प्रतिकूल होती जा रही है। उसका परिणाम हुआ की, कसान अ धका धक ऋणी होते जा रहा है। आजादी के बाद और उदारीकरण, औद्योगीकरण, एवं अन्य आ र्थक सामाजिक सुधारो के माध्यम से उद्योगो का कायाकल्प हुआ और उद्योगोको घाटे से उभारने के लये करोडो रुपये की सरकारी राहत दी

जाती रही है, ले कन जब कृषी क्षेत्र की बात आती है, कसानो के कर्ज की बात आती है तो इतनी कम राशी दी जाती है, उससे कसानो को लाभ तो नही होता है, हा उनका मखौल जरूर मजाक जरूर उडाया जाता है।

सरकार द्वारा कये जा रहे प्रयास

सरकार समय समय पर कसानों और कृषी की उन्नति के लये अनेक योजनाएँ आहे बना रही है तथा उन्हे कार्यान्वित कर रही है।

राष्ट्रीय कसान निति **2007 -** बनाई गई है। इस निति के तहत अन्य बातों के साथ कये गये उपबंधो मे भूमी, जल, पशुपालन, मत्स्यपालन और जैव संसाधनों में परिसंपत्तीगत सुधार, समर्थन सेवाएं और आधुनिक प्रौद्यो गकीयों के अनुप्रयोग जैसे- आदानो, कृषी जैव सुरक्षा, प्रणालीयों, उच्च गुणवत्तायुक्त बोजो और रोग मुक्त रोपन सामुग्री की आपूर्ति, मुद्रा, उर्वरकता और उसके स्वास्थ्य मे सुधार, समे कत कट प्रबंधन प्रणालीयाँ, बालगृह, बाल परिचर्या केन्द्र, पोषक तत्व, स्वास्थ और संबं धत प्र शक्षण के अंतर्गत महिलाओ के लए समर्थन सेवा, उ चत व्याज दरो पर संस्थागत ऋण की सामायिक, पर्याप्त और सुलभ उपलब्धता, कसान अनुकूल बीमा उपकरण, सूचना और संचार प्रौदयो गकी का उपयोग, कृ षगत वस्तार का पुनरुद्धार करने के लए कसान स्कुलो की स्थापना, देशभर मे एम एस पी का प्रभावी कार्यान्वयन, कृषी बाजार अव संरचना का वकास, कसान परिवारों के लए गैर कृ षगत ग्रामीण रोजगार पहल तथा ग्रामीण ऊर्जा आदी के लए समे कत प्रयास शा मल है।

कसानो की स्थिती सुधारणे हेतू सुझाव -

आज भारतीय कसान परावलंबी हो गया है। उसे बीज के लये उर्वरक के लये, जुताई के लए और बिक्री के लये दूसरों पर निर्भर होना पड रहा है। इससे खेती की लागत बढती जा रही है। छोटे कसानो को खेती करना जहा असंभव सा हो गया है। इस लये भारत के कसान और खेती भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ फर से बने इसके लए आवश्यकता है की कसानों को पैदावार का उ चत मूल्य मलना चाहिए, उन्हे कम ब्याज पर समय पर ऋण मुहैया करना चाहिए, फसल नष्ट होने पर बिमा या अन्य स्त्रोतों से उ चत मुड़ावजा मलना चाहिए। इसके साथ ही संचाई की व्यवस्था समय पर और उ चत कमत पर उर्वरक की उपलब्धता हा सल होनी चाहिए।

संदर्भसूची

1) सामाजिक समस्याएं - राम आहुजा
2) भारतीय सामाजिक समस्याएं - डॉ. मंजुलता छिल्लर
3) सामाजिक समस्याएं - डॉ. संजय साळीवकर
4) भारतीय सामाजिक समस्या - प्रा. अशोक गोटे
5) समका लन भारतीय सामाजिक समस्या - डॉ. का लदास भांगे व प्रा. चांगदेव मुंडे